श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी
का
राष्ट्रचिंतन

- राष्ट्र का आत्मविश्वास
- हिन्दुत्व की धारणा
- राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का आधार
- कम्युनिज्म अपने ही कसौटी पर
- पिछड़े बंधुओं की समस्या
- संघे शक्तिः

श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी

का

राष्ट्रचिंतन

हिन्दुत्व की धारणा

हिन्दुत्व की धारणा

संप्रदाय नहीं-स्वार्थ के कारण झगड़े

रिलीजन के कारण दुनिया में भी क्या कभी झगडे हुए ? दुनियां में भी कभी झगड़े नहीं हुए । रिलिजन का नाम लेकर, अपना स्वार्थ बढ़ाने की जो कोशिश करते हैं उनके कारण झगड़े हुए । और यह बहाना लेने वाले दो तरह के लोग है । एक राजनीतिक स्वार्थ को लेकर चलते है', दूसरे व्यक्तिगत स्वार्थ को लेकर चलते हैं । हर एक 'रिलीजन में जब कोई व्यवस्था का निर्माण होता है-तो उस समय उसके कई ठेकेदार निर्माण हो जाते हैं, जिसको उपाध्याय कहते है, पुरोहित कहते है, ऐसे खड़े हो जाते हैं । वे यदि अपना निहित स्वार्थ बना लेते हें, तो उस निहित स्वार्थ के कारण झगड़े खड़े होते हैं । हिन्दुस्तान में जो आक्रामक आये ।जितने भी आक्रामक आये-सब लोगों के सामने एक समस्या थी । जो आक्रामक आये वे अपने को आक्रामक नहीं कहते थे । वे बड़े साघु-सन्त थे, उनको अल्लाह का साक्षात्कार हुआ था, अल्लाह का संदेश यहाँ पहुंचने के लिए ही उन्होंने अपनी तलवार निकाली थी, ऐसा नहीं । मोहम्मद गजनवी यहाँ का सोना और हीरे लूटने आया था वह कोई साक्षात्कारों पुरुष नहीं था । तो जितने लोग आये चाहे तुर्क हो, मुगल हों, पठान हों, अरब हों, चाहे जो आये वे यहाँ की सम्पत्ति के लालच से आये है यहां शासन चलाने के लालच से आये । लेकिन दूर से आक्रामककारी जो आते हैं उनकें सामने समस्या रहती है-अंग्रेजों के सामने भी रहीं कि इतने लम्बे-चौड़े देश पर थोड़ी संख्या में हम कैसे शासन चला सकते हैं ? अपने देश से लायेंगे तो भी कितने लोगों कों लायेंगे ? तो इतना यह विशाल देश है कि जब तक हम यहाँ अपना गुट, अपने लिए अनुकूल इस तरह का एक गुट तैयार नहीं करते तब तक यहाँ शासन चलाना संभव नहीं । और गुट बनाने का एक अच्छा रास्ता है अपना रिलिजन यहाँ फैलाना । यानि अपने रिलिजन के जो लोग हो जायेंगे वो जात्तिबाह्य माने जायेंगे, बहिस्कृत हो जायेगे और अपने लिए उनका ही अनुकूल गुट बन सकता है । इस दृष्टि से यहाँ धर्मान्तरण का प्रयोग हुआ । किन्तु जो धर्मान्तरण कराने वाले राज्यकर्ता मुस्लिम थे वे बड़े श्रद्धालु मुस्लिम थे ऐसा नहीं दिखाई देता । अंग्रेजों ने यही किया, उन्होंने अपनी इसाईयत यहां फैलाई । आज भी पूर्वाचल में चाहे मेघालय हो,

अरुनाचलहो, असम हो, नागालेंड हो, इसाईयत का जो प्रचार चल रहा है वो कोई जीसस का साक्षात्कार कराने के लिए नहीं चल रहा है । बल्कि राजनैतिक स्वार्थ बढ़ाने के लिए इसाईयत का प्रचार चल रहा है । तो जीसस के कारण झगड़े नहीं । यहां तक कि जिस पाकिस्तान की निर्मिति हुई है, उस पाकिस्तान के निर्माता बै. जिन्ना न तो मस्जिद में जाते थे, न कुरान पढ़ते थे । नास्तिक पुरुष थे और जब उनको यह पता चला कि इस्लाम का नाम लेने से मेरी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा पूर्ण हो सकती है, उस समय उन्होंने इस्लाम का नाम लिया । वरन वे इस्लाम के बारे में कुछ भी आस्था रखने वाले नहीं थे यह बात सब लोग जानते हैं । तो राजनीतक स्वार्थ के लिए इसाईयत या इस्लाम का उपयोग लोगों ने किया । वास्तव में रिलिजन के कारण ये झगड़े हुए ऐसा कोई नहीं कह सकता । रिलिज़न के नाम का उपयोग यह राजनैतिक स्वार्थ वालों ने किया ।

वैसे ही जिनका निहित स्वार्थ निर्माण हुआ था यानि रिलिजन संस्थागत होने के बाद जो व्यवस्था आई उसमें जिनको प्रमुखता प्राप्त हुई थी यानि उपाध्याय वर्ग चाहे उसको मुल्ला कहा जाय विशप कहा जाय पादरी कहा जाय- इन लोगों ने अपने निहित स्वार्थ के लिए भी झगड़े निर्माण किए यह दुनिया का इतिहास बताता है । आज हमें यह कहा जाता है कि हिन्दू मुस्लिम दंगे होते है । ठीक है यहां हिन्दू भी हैं मूसलमान भी हैं । लेकिन जहां १००% मुसलमान देश हैं वहाँ दंगे क्यों हुए ?

विभिन्न देशों में राष्ट्रीयता का जागरण

अफगानिस्तान में प्रथम महायुद्ध के पश्चात्, जैसे सभी मुस्लिम देशों में वैसे अफगानिस्तान में भी राष्ट्रीयता का भाव जागा । और उनको लगा कि मोहम्मद से पहले भी अपनी अस्मिता एक अलग थी । और इस दृष्टि से यह नया भाव निर्माण हुआ कि हम आर्यन हैं, अपनी कुछ आर्यन संस्कृति है । राष्ट्रीयता का भाव जैसे निर्माण हुआ वैसे ये रिलिज़न के ठेकेदार नाराज हो गए ओइ उस नवजागृति का नेतृत्व करने वाले अमीर अमानुल्ला को उन्होंने पदच्युत किया, भागने के लिए बाध्य किया यह इतिहास हम जानते हैं । ईरान में भी जब नवराष्ट्रीयता का जागरण हुआ, तो उस समय जो उनके इस्लामपूर्व वीर पुरुष थे, सोहराब हैं, रुस्तम, जमशेद हैं, बेहराम हैं, उनकी स्मृति

का जागरण हुआ। और इस बात का विरोध वहां भी रिलिज़न के ठेकेदारों ने किया । यह इतिहास बताता है। इजिप्त में यहीं प्रक्रिया हुई । तुर्कस्तान में तो और भी विशेष उदाहरण हमें दिखाई देता है । मुस्तफा कमाल पाशा जब आये तो उन्होंने कहा कि हम कुरान को मानते हैं, मस्जिद को मानते हैं, मोहम्मद साहब को मानते हैं, अल्लाह को मानते हैं लेकिन हमारी राष्ट्रीयता की मांग है कि रिलिज़न के नाम पर अरेबिक संस्कृति का तुर्की संस्कृति पर आक्रमण बर्दास्त नहीं कर सकते । इस दृष्टि से जितना आक्रमण अरेबिक संस्कृति का तुर्कों पर हुआ था वह दूर करने के तरह-तरह के उपाय उन्होंने किये । उसमें से एक उपाय यह था कि कुरान का तुर्की भाषा में भाषान्तर है कुरान अरेबिक भाषा में है । उन्होंने कहा कि हम अपनी राष्ट्रभाषा में कुरान का अनुवाद करेंगे । तो ठेकेदार लोगों ने विरोध में आवाज उठाई । कहा कि पाखंड है । केमाल पाशा ने कहा कि यह पाखंड कैसे हो सकता है ? भाई अरुलाह की प्रार्थना ही करनी है न ? क्या अल्लाह अज्ञानी है, अनपढ़ है, कि उसको अरेबिक तो समझ में आती है, परन्तु जो तुर्की भाषा में प्रार्थना करेंगे समझ में नहीं आएगी ? तो तुर्की में उन्होंने अनुवाद करवाया । और एक शुक्रवार ऐसा तय किया कि जिस शुक्रवार को तुर्कस्तान की सभी मस्जिदों में सरकारी आदेश के अनुसार उसी अनुदित कुरान को पढ़ा जायेगा। तो शुक्रवार को पूरे तुर्कस्तान में दंगे हुए । रक्तपात हुआ । वहाँ कौन से हिन्दु-मुस्लिम लड़ने गए थे ? सब मुस्लिम है १०० % मुस्लिम देश है । लेकिन वहाँ भी दंगे हुए । तो नवजागृत राष्ट्रीय लोग (युवा तुर्क) जो नवजागृत राष्ट्रीय तुर्क थे। वे जो रिलिजन के ठेकेदार थे उनके अनुयायी- उनके बीच में सारे तुर्कस्तान में दंगे हुए । यह क्या रिलिजन के कारण हुए ? अपनी निहित स्वार्थ की रक्षा के लिए इस तरह के दंगे कराऐ गये। जो प्रक्रिया वहां है, वही यहां है। रिलिजन के कारण कभी दंगा वगैरह हो भी नहीं सकता।

सत्ता का स्वार्थ

हमारे यहाँ झगड़े संप्रदाय के कारण हुए ऐसा जो लोग कहते हैं उसका कारण है उनका निहित स्वार्थ । यहाँ दोनों तरह के निहित स्वार्थ हैं, मुसलमानों को अलग करने वाले । एक तो जो ठेकेदार हैं उनका भी निहित स्वार्थ है, और राजनैतिक स्वार्थ तो स्पष्ट है । जैसा मैंने कहा कि परकीय आक्रमणों को चाहे मुसलमान रहे चाहे अंग्रेज रहे अपना

गुट यहां निर्माण करना था, अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए रिलिजन का उन्होंने दुरुपयोग किया । वास्तव में वे श्रद्धालु लोग नहीं थे । अंग्रेजों ने तोड़ो और शासन करों के लिए ईसाईयत का यहीं प्रचार किया । यह एक दु:ख की बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जो राजनीतिक पद्धति अपने देश में आयी वह एक विभाजनकारी पद्धति है । केवल-प्रादेशिक राष्ट्रवाद पर आधारित होने के कारण यह विभाजनकारी है । और यहाँ जो जितनी अलगाव की बात करेगा, उतने उसको बोट ज्यादा मिलेंगे । वोट पाने के लिए देश का क्या होगा इसकी फिक्र न करते हुए, मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग रखने की कोशिश कर रहे हैं । आप साधारण देहात में रहने वाले मुसलमान के पास जाएंगे तो उसके दिमाग में यह कोई चक्कर नहीं । जब तक राजनैतिक नेता वहाँ जाता नहीं जाता और वोट पाने के लिए उसको हिन्दुओं से अलग नहीं करता और उसके दिमाग में भय निर्माण नहीं करता कि मुझे वोट दो नहीं तो बन्धु तुम सुरक्षित नहीं हो, तब तक साधारण देहाती मुसलमान उकसाया जाने वाला आदमी नहीं । वह भी जानता है कि हम यहीं के हैं । हमारा कुल-खानदान और हिन्दुओं का कुल-खानदान एक है । सब कुछ जानता है। उसको बिगाड़ने वाले मुगल, तुर्क, पठान थे, फिर अंग्रेज आये और ने अब राजनैतिक नेता आ गये । और ये राजनैतिक नेता तब तक देश का विभाजन करने वाली बात करते रहेंगे जब तक, या तो आज की राजनीतिक पद्धति बदली नहीं जाती, या आज की पद्धति में जब तक उनको यह भय पैदा नहीं होता कि इस तरह मुसलमानो का वोट प्राप्त करने के लिए यदि हम भेद पैदा करते है जब मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग करते हैं, उनके मन में हिंदुओं के बारे में भय पैदा करते तो उसके कारण मुसलमानों का तो वोट मिलेगा, किन्तु इससे ज्यादा हिन्दुओं के वोट खिसक जाएंगे, तब तक उनकी गन्दी राजनीति का यह खेल चलता रहेगा । याने मूलत: कोई भेद नहीं किन्तु ये जो मंथरा का काम करने वाले लोग हैं उनके कारण यह विभेद पैदा हुआ है । ये राजनैतिक नेता मंथरा का काम कर रहे और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर कीचड़ उछाल रहे हैं ।

हिन्दु रिलिजन (संप्रदाय) नाम की कोई वस्तु नहीं

आज हमारे यहां राष्ट्र के विषय में जो बात करते हैं वे कहते हैं कि यहां संघर्ष राष्ट्रीयता विरुद्ध साम्प्रदायिकता का है । यह साम्प्रदायिकता क्या चीज है ? ऐसा कहते हैं कि

धर्म के कारण साम्प्रदायिकता आती है । हिन्दू धर्म वाले मुसलमान धर्म वालों को तकलीफ देते हैं । मैं इस बात में नहीं जाऊंगा कि कौन किसको तकलीफ देता है । यह छोटी बात है । लेकिन हम यह सोचे कि हिन्दू धर्म के कारण क्या कभी संघर्ष पैदा हो सकता है ? सबसे पहले तो हम एक बात देखें कि हिन्दू नाम का कोई संप्रदाय है क्या ?

विविधता में एकता

यहां सभी पंथ हैं, सभी संप्रदाय हैं । हिन्दुओं के अलग-अलग संप्रदाय हैं, परन्तु हिन्दू संप्रदाय नाम का कोई पदार्थ नहीं । फिर भी हिन्दू यह जानता है कि संप्रदाय क्या है । मनुष्य और अन्तिम सत्य के बीच में जो रिश्ता है उसको संप्रदाय कहा गया है । Relationship between man and his maker. फिर उसको आप कोई भी नाम दीजिए-एकं सत् विप्रा: बहुधा वदन्ति । तत्व एक ही है, अलग-अलग लोग अलग-अलग नाम से पुकारते हैं । कोई उसको विष्णु, कहे, कोई शिव कहे, कोई अल्लाह कहे, कोई स्वर्ग का पिता कहे--मार्किसस्ट उसको Matter (जड़ वस्तु) कहेगा । नाम आप कुछ भी दीजिए, अन्तिम तत्व एक ही है । उसी को अलग नाम से पुकारा जाता है । इसलिए अपने यहाँ कहा गया कि अन्तिम तत्व एक है, गन्तव्य स्थान एक है । वहाँ तक पहुंचने का हर एक का रास्ता अलग-अलग ही होना चाहिए । क्यों ? क्योंकि हर एक का शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर, बौद्धिक स्तर, आत्मिक सार, अलग-अलग है । इसके कारण सबके लिए एक रास्ता नहीं हो सकता । सबकी मानसिक भूमिका अलग-अलग हैं । सबके प्रारम्भ स्थान अलग-अलग हैं । और इसके कारण सबके लिए एक संप्रदाय हो नहीं सकता । मान लीजिये कि चार लोग चार स्थान पर खड़े हैं । बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, और दिल्ली । सबको नागपुर पहुँचना है। नागपुर लगभग बीच में है, हिन्दुस्थान के केन्द्र में तो सबके लिए क्या आप एक दिशा बता सकते हैं ? मान लीजिए कि मद्रास के आदमी को ध्यान में रखकर आपने कहा की सबको एक ही दिशा लेनी चाहिये, उत्तर की ओर जाने की, तो हो सकता है कि मद्रास वाला तो नागपुर पहुंच जायगा । किन्तु दिल्ली वाला किधर पहुंचेगा ? नागपुर नहीं पहुंचेगा । सबके लिए एक दिशा नहीं हो सकती, क्योंकि हर एक का प्रारम्भ स्थान अलग-अलग है । तो हमारे यहां माना गया कि हर एक का रास्ता अलग हो सकता है, होना चाहिये । उसकी प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि, शारीरिक-मानसिक-बौद्धिक-आत्मिक स्तर, सारा ध्यान में रखते

हुए हर एक का अलग-अलग रास्ता होना चाहिए । और इसीलिए शायद ३३ कोट देवता हिन्दुओं के हैं ऐसा बताया गया । उस समय हिन्दुस्थान की जनसंख्या ३३ कि करोड़ होगी । हर एक का अलग-अलग देवता है ऐसा माना गया । और जब भगवान ने गीता में यह कहा-

ये येऽप्यन्य देवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विता:

तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधि पूर्वकम् ।। ९।। २३ । गीता

जो अन्य देवताओं के भी भक्त है वे मेरा ही पूजन कर रहे । तो उन्होंने निश्चित रूप से उनके समय बाकी जितने भी देवता अस्तित्व में होंगे उनकी कल्पना की । वैसे ही उनके पश्चात जितने देवता निर्माण होने वाले होंगे दुनिया में, सबकी कल्पना ऊंहोने की । उसको आप अल्लाह कहिए, जहोंवा कहिए, कुछ भी कहिए, कितने नाम । तो सभी देवताओं की उन्होंने कल्पना की है । उन्होंने स्पष्ट कहा है येऽप्यन्य देवता । और इसीलिए हमारे यहां पर एक प्रार्थना है-वह हमारे इस दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण करती है । वह त्रेलौक्यनाथ हरि मेरे वांछित फल मुझे दे । कामना पूरी करे । और उस त्रेलौक्यनाथ हरि का वर्णन क्या किया -

यं शैया: समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो

बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटव: कर्तेति नैय्यायिका:

अर्हन् इत्यथ जैनशासनरता: कर्मेति वैशैषिका:

सोऽयं नो विदधातु वांछितफलं त्रेलोक्यनाथो हरि: ।।

"शैव जिसको शिव कहते है, वेदान्त, जिसको ब्रहा कहते हैं, वैशेषिक जिसको कर्म कहते हैं, न्यायिक जिसको कर्ता कहते हैं, बौद्ध जिङ्को बुद्ध कहते हैं, जैन जिसको अर्हत कहते हैं वह हरि मेरी कामना पूरी करे । यह स्पष्ट है कि यदि आज यह निर्माण होता तो शायद कहते की मुसलमान जिसको अल्लाह कहते हैं, ईसाई जिसको जीजस कहते हैं, यहुदी जिसको यहोवा कहते हैं, वह मेरी कामना पूरी करे । चीज एक ही है, रास्ते अलग-अलग हैं यही इसका अर्थ है । इस दृष्टि से संप्रदाय को यहां व्यक्तिगत बात माना गया है । हर एक का संप्रदाय अलग-अलग होना चाहिए ऐसी अपने यहां कल्पना

है, इनके कारण हिन्दू संप्रदाय के लिए झगड़ा करेगा यह हो ही नहीं सकता । हिन्दू संप्रदाय नाम की कोई वस्तु नहीं ।

उदाहरण के लिए किराना माल की दूकान लें । शायद इधर परचून की दूकान कहते हैं । अब आप उस दुकान में जाइये । १०/- का नोट दूकानदार को दीजिए, और कहिए कि किराना नाम की वस्तु मुझे १ ०/- की दीजिए । या परचून नाम की वस्तु १०/-की दीजिए । कोई दुकानदार आपको दे नहीं सकता, क्योंकि वह दूकान तो है परचून या किराने की, लेकिन परचून या किराना नाम की वस्तु नहीं है । तो इस संज्ञा के अन्दर और पचास किस्म की चीजें आ सकती हैं । परन्तु किराना नाम की वस्तु नहीं । हां हिन्दू के अन्तर्गत कई संप्रदाय आते है सब संप्रदाय हिन्दू के अन्तर्गत आ सकते हैं । सभी उपासना पद्धति हमारे अन्दर आ सकती हैं । किन्तु हिन्दू नाम का कोई संप्रदाय नहीं । इसके कारण यहां झगड़ा होने की कोई संभावना नहीं । और यही कारण है की अलग-अलग संप्रदाय के लोगों का यहीं स्वागत हुआ, और कहीं स्वागत नहीं हुआ । सबसे पहले जीजस की मृत्यु के पश्चात् ५५ वे साल में सर थामस यहां आये । उपासना पद्धति के साथ आये । ईसाइयत का पालन करते हुए छोटी सी संख्या में यहां रहे, केरल में । किसी ने उनके ऊपर आक्रमण नहीं किया । फारसी यहां आये, अपनी पूजापद्धति को सम्हाल कर रहे, किसी ने आक्रमण नहीं किया । और इजरायल ने जो ग्रंथ लिखा है उसमें कहा है कि हर देश में हमारे ऊपर आक्रमण हुआ, लेकिन हिन्दुस्थान अकेला है जिन्होंने हमारे साइनागम्स पर, हमारे मन्दिर पर, आक्रमण नहीं किया, ऐसा अकेला देश है । यहां पूजा पद्धति के लिए कभी झगड़ा नहीं हुआ ।

'हिन्दुराष्ट्र' की कल्पना रिलिजन पर आधारित नहीं

तो इस तरह से राष्ट्र कल्पना जो है वह संप्रदाय पर आधारित नहीं हैं। संप्रदाय के कारण उसमें भेद नहीं आ सकता । हमारे यहाँ यह कल्पना है कि, राष्ट्र एक, संप्रदाय हर एक का अलग-अलग रह सकता है । इसके कारण प० पू० श्री गुरुजी ने बार-बार कहा कि भई आप कुरान पढ़ सकते हैं, मस्जिद में जा सकते हैं, बाईबिल पढ़ सकते हैं, गिरजाघर में जा सकते हैं, लेकिन यह मान लो कि यह राष्ट्र मेरा है । उन्होंने कहा कि, हजारे पूर्वज आपके पूर्वज हैं । यह कहने में आपको संकोच क्यों हो रहा है कि रामचंद्र और कृष्ण हमारे पूर्वज हैं? जो राष्ट्रीय ग्रन्थ हैं- आप उनको धर्म ग्रन्थ माने या न माने लेकिन वे राष्ट्रीय ग्रन्थ हैं । वेद हैं- वेद को न मानने वाले कई हिन्दू हैं, परन्तु राष्ट्रीय ग्रन्थ

के नाते मानते हैं । कोई अमेरिका में रहेगा और कहेगा कि मैं अमेरिका का राष्ट्रीय तो हूं परन्तु जार्ज वाशिंग्टन-जेफरसन- लिंकन को इसलिए नहीं मानता क्योंकि वे मुसलमान नहीं थे, या हिन्दू नहीं थे, उसको वहां का राष्ट्रीय रहने का अधिकार नहीं रहेगा । रिलिजन के नाते आप कुछ भी रहें- इस्लाम रहें, शैव रहें, वैष्णव रहें, लेकिन अमेरिका में अगर वहां के राष्ट्रीय के रूप में रहना है तो वहां के राष्ट्र को मानना पड़ेगा । वह चाहे आपके रिलिजन का हो या न हो । वहां के राष्ट्रीय ग्रन्थ को मानना पड़ेगा । उनकी स्वातंत्र्य की घोषणा है, संविधान है उसको मानना पड़ेगा । यह मेरे राष्ट्रग्रन्थ हैं ऐसा कहना पड़ेगा । जो नहीं कहेगा उसे अमरीकन राष्ट्रीय होने का अधिकार नहीं । वह नियम यहां भी लागू होना चाहिए । रिलिजन के कारण झगड़े होते, तो इन्डोनेशिया में जो दृश्य है वह हम न देख पाते । रिलिजन का और झगड़ों का कोई सम्बन्ध नहीं । इण्डोनेशिया तो हिन्दुस्थान के बाहर है लेकिन उसकी संस्कृति हिन्दू संस्कृति है । और इसके कारण वहां मुस्लिम-बहुल देश होते हुए भी हम देखते हैं कि मुसलमान कुरान पढ़ते हैं, मस्जिद में जाते हैं, परन्तु संस्कृति के नाते रांमचन्द्र जी की रामलीला भी करते है । महाभारत का भी वहां प्रचार है। विद्यार्थी सुबह वहाँ नमाज पढ़ते हैं, परीक्षा के लिए जाते हैं गणेश जी को नमस्कार करके आशीर्वाद लेकर दोनों में कोई अन्तर उनको नहीं लगता । यह सामंजस्य भारत में भी चरितार्थ होना हमारे स्वभाव में ही है ।

हिन्दु और भारतीय दोनों समानार्थक

आजकल यह बहुत झगड़ा चला है । कुछ राजनैतिक नेता वोटों के लालच में सुझाव दे रहे हैं कि हिन्दू शब्द छोड़ दो । भारतीय शब्द ले लो । दोनों एक ही है । समानार्थक हैं । हमने कहा कि हम तो मान सकते हैं कि दोनों समानार्थक हैं, अगर आप कहते हैं और अगर आप ईमानदारी से कह रहे हैं कि हिन्दू- और भारतीय दोनों समानार्थक हैं तो फिर 'हिन्दू' क्यों छोड़ दिया जाए? इसी को रखा जाय । लेकिन बोले कि नहीं, छोड़ना ही अच्छा । हमने कहा कि क्यों अच्छा? दोनों समानार्थक हैं, फर्क क्या पड़ेगा? तो सीधी बात यह है कि आप ईमानदारी से यह बात नहीं कह रहे हैं कि हिन्दू और 'भारतीय' समानार्थक हैं । आपके मन में हिन्दू का भावार्थ अलग है, भारतीय का अलग है । और आपके कहने के पीछे मन्तव्य यह है कि हिन्दू शब्द छोड़ने के कारण अहिन्दुओं के वोट प्राप्त करने में सहायता होगी । केवल चुनावी राजनीति ध्यान में रखकर आप सत्य सिद्धांत बेचने को तैयार हो । हमने कहा कि रा. स्व. संघ सत्य

सिद्धांत को बेचेगा नहीं, क्योंकि हम मतों के याचक नहीं । जो याचक है वे अपने मन की नहीं कर सकते । किन्तु हम वोटों के भिखारी नहीं हैं। हम तो अपना सत्य सिद्धांत प्रतिपादित करते रहेंगे बार-बार प्रतिपादित करते रहेंगे । और कोई भी बात सत्य है या असत्य है, इसकी कसौटी मतों की संख्या से नहीं हो सकती । सिद्धांत की शक्ति उसकी सत्यता पर निर्भर है । आप उदाहरण के लिए देखिए । एक समय था कि योरोप के सारे लोग यह मानते थे कि पृथ्वी यह सारे विश्व का केन्द्र है और सूर्य पृथ्वी के चक्कर काटता है । उस समय एक वैज्ञानिक ने कहा कि 'नहीं' । उन्होंने अन्वेषण पूर्वक यह सिद्ध किया कि पृथ्वी विश्व का केन्द्र नहीं, सूर्य विश्व का केन्द्र है और पृथ्वी सूर्य के चक्कर काटती है । सारे योरोप के लोग बौखला उठे । उन्होंने कहा कि यह पाखण्डी है । झूठी बात बोल रहा है । इसको मारना चाहिए । किसी ने कहा कि सूली पर चढ़ाना चाहिए । अब उस समय मतदान होता और कहते कि यह वैज्ञानिक जो कहता है, उसके पक्ष में कितने हैं और विरोध में कितने हैं, तो यूरोप के सारे लोग उसके विरोध में वोट देते, वह एक अकेला रह जाता किन्तु इसके कारण क्या बहुमत की जीत हो गयी? आज दुनिया किस सिद्धांत को मान रही है? उस समय यूरोप का बहुमत जिस सिद्धात के विरोध में था उसी सिद्धांत को मान रही है । क्यों कि बहुमत के आधार पर कोई सत्य सिद्ध नहीं हुआ करता-सत्य की अपनी निजी शक्ति हुआ करती है । तो हम जो कह रहे हैं यदि वह सत्य है तो उसकी निजी शक्ति है, वह बहुमत अल्पमत के आधार पर तय नहीं हो सकता । और इसके कारण चुनाव को ध्यान में रखते हुए जैसे चुनाव समझौते हुआ करते है वैसा यहां सत्य-सिद्धांत में समझौता नहीं हो सकता ।

तो हमने कहा कि हिन्दू-भारतीय एक हैं, तो हिन्दू ही क्यों नहीं कहते? उन्होंने कहा कि नहीं कुछ लोग नहीं चाहते । हमने कहा कि वे लोग तो संघ को ही कहां चाहते है? १९२५ से मैं देख रहा हूं कि हमेशा संघ के ऊपर टीका करने वाले लोग रहे । लोगों को खुश करने का हम धंधा उठाएंगे तो संघ को ही बंद करना, यही एक मात्र रास्ता रहेगा । तो लोगों को खुश करना हमारा धंधा नही है । लोगों को संस्कार देना लोगों को सही रास्ते पर लाना । जैसे छोटे बच्चे का होता है वह समझता नहीं, उसकी हर एक बात आप मानते जाएंगे, उसके कहने के अनुसार करते जाएंगे, तो कहां तक करेंगे । कभी-कभी उसका अनुनय, करना, पड़ेगा, कभी उसको चपत भी लगानी पड़ेगी । लेकिन

उसको सत्य रास्ते पर तो लगाना ही पड़ेगा तो हम अनुनय करने वालों में से नहीं हैं तुष्टीकरण करने वालों में से नहीं हैं । इतना मुसलमानों के बारे में हमने कहा उसका अर्थ यह नहीं है कि हम मुसलमानों का अनुनय करना चाहते हैं । हम वोट के भिखारी नही हैं तो हमें तुष्टीकरण करने की आवश्यकता क्या? हम अपने सिद्धांत, सत्य सिद्धांत का प्रचार करेंगे हमें विश्वास है कि आज नहीं तो कल यह मन्थरा रूपी राजनीतिक नेता दूर हो जाएंगे, ये निष्प्रभ हो जाएंगे । इनकी विश्वसनीयता समाप्त होगी । यहां का मुसलमान समझेगा कि हिन्दू यह शब्द रिलिजन का वाचक नहीं राष्ट्र का वाचक है । केवल इन मंथराओं को कान पकड़ कर दूर करने की आवश्यकता है, और वह भी करेंगे । इतना आत्मविश्वास होने के कारण हम समझौता क्यों करें । समझौते की कोई आवश्यकता नहीं, हम अहिंदुओं का अनुनय भी करने वाले नहीं उनको सीधे बताने वाले हैं कि, इस राष्ट्र के आप अंग हैं, इस नाते आप समझेंगे, इसमें सबका कल्याण है ।

हिन्दू दृष्टि चराचर के साथ एकात्म

लेकिन मैंने कहा कि आप ये जो हिन्दू और भारतीय कह रहे है, आप ऊपर- ऊपर से ही कह रहे हैं । कहते हैं कि हिन्दू याने भारतीय-भारतीय याने हिंदू, तो भी हिंदू शब्द छोड़ने का आपका आग्रह है । हिन्दू शब्द का भावार्थ दूसरा होता है, भारतीय से भिन्न होता है ऐसा आपको लगता है । कहने लगा हाँ! थोड़ा ऐसा ही है । हमने कहा, नहीं, बहुत सा ऐसा है । ये भावार्थ अगर भिन्न है, तो इसकी चर्चा होनी चाहिए कि यह भिन्नता कहाँ है? भारतीय कहने से प्रादेशिक राष्ट्रवाद आ जाता है । उसमें सब लोग आ जायेंगे यानि सभी मतदाता । उनका सिद्धांत से संबंध नहीं, वोटों से संबंध है । तो सभी मतदाता 'भारतीय' में आ जायेंगे, हमसे खुश रहेंगे, और हमने हिन्दू कहा तो रूढ़ार्थ में जो हिन्दू हैं वो तो वोट देंगे, किन्तु दूसरों को सारा समझाते तब तक तो चुनाव भी निकल जायेंगे । हम कहाँ तक समझायेंगे? समय कहाँ है? और इसके लिए समझाने की, सत्य प्रतिपादन की क्यों झंझट करना? चुनाव जल्द आ रहा है समझौता कर लो । हमने कहा कि आपके मन से हिन्दू का भावार्थ भारतीय से कुछ संकुचित है । हमने कहा कि आप भारतीय को हिन्दू नहीं मानते, क्योंकि भारत को 'प्रादेशिक राष्ट्र' मान रहे हैं । मैं हिन्दू हूं इसके कारण प्रादेशिक राष्ट्रवाद तक सीमित नहीं रह सकता । वास्तव में भारतीय शब्द हिन्दू में समव्याप्त होने में हमारी ओर से कोई आपत्ति नहीं

लेकिन आप उसको सीमित रखना चाहते हैं । और मैं सच्चा हिन्दू हूं - हमारे यहां सन्यासी के लिए कहा गया कि 'स्वदेशो भुवनत्रय' । वह किसी एक राष्ट्र का नहीं, सारा 'भुवनत्रय' उसका हो जाता है । वह सारी दुनिया का नागरिक बन जाता है । आपके भारतीयत्व में मैं आता हूं तो मैं दुनिया का नागरिक कैसे बनूंगा? प्रादेशिक राष्ट्रीयत्व से ऊपर उठकर संपूर्ण चराचर अस्तित्व के साथ मैं एकत्म होना चाहता हूं । आपके राष्ट्रवाद की चौखट में मैं रहा तो चराचर के साथ मैं कैसे एकात्म हो सकता हूं?

मनुष्य के विकास का क्रम यही हिन्दुत्व

हिन्दू विभिन्न स्तर पर विभिन्न बातों के साथ परिचित हैं । एक स्तर पर व्यक्ति के साथ एकात्म है, एक स्तर पर परिवार के साथ, एक स्तर पर राष्ट्र के साथ, एक स्तर पर मानवता के साथ, एक स्तर पर चराचर विश्व के साथ वह एकात्म है । यह मनुष्य के जागृति के विकास का क्रम अर्थात हिन्दुत्व है । आप हमारे विकास का क्रम रोक देंगे, हमको कहेंगे कि सन्यास मत लेना । मानव जाति का एक सदस्य मत बनना । चराचर अस्तित्व के साथ एकात्म मत बनना । क्योंकि मेरे वोट निकल जायेंगे । यह कैसे हो सकता है? तो प्रादेशिक राष्ट्रवाद के चौखट में हिन्दू बैठ नहीं सकता । हाँ, यह बात ठीक है कि जागृति के विकास का जो क्रम है वह पृथक नहीं, (Inclusive) समावेशक है । पृथक का मतलब होता है कि यदि मैं परिवार के साथ एकात्म हूं तो मेरा अपने से प्रेम नहीं । मैं समाज के साथ प्रेम करता हूं तो परिवार से घृणा करता हूं । यह कल्पना नहीं है । समावेशक है माने जब मेरी जागृति का विकास परिवार तक होता है तो मैं परिवार से प्रेम करता हूं, अपने से भी करता हूं । समाज से भी प्रेम करता हूं । मानव जाति से प्रेम करता हूं, तो राष्ट्र से भी प्रेम करता हूं । चराचर विश्व के साथ एकात्म हूँ तो राष्ट्र के साथ भी एकात्म हूँ । यह तो ऐसे विकास का क्रम है जैसे बीज, अंकुर, पौधा, शाखा, उसके पत्ते, फूल और फल होते हैं । यह विकास का क्रम एक दूसरे के खिलाफ नहीं है। अब यह विकास का समावेशक क्रम आपके प्रादेशिक राष्ट्रवाद के भ्रम में आपको रोकने का क्या अधिकार है? तो हिन्दू और भारतीय यदि एक है तो हिन्दू ही रखा जाए । और यदि भावार्थ में अन्तर है तो वह नहीं है जो आप समझते हैं । हिन्दू संकीर्ण है, भारतीय विस्तृत है, यह मानना ठीक नहीं । भावार्थ यह है कि हिन्दू अति

विस्तृत है सबका समावेश कर लेने वाला है । फिर हमें भारतीय शब्द लेकर हिन्दू शब्द छोड़ने की क्या आवश्यकता है?

अब यह सारा विचार एक साथ तो हर एक के समझ में आना सम्भव नहीं । अतएव सम्पूर्ण दर्शन दृष्टि के सामने होते हुए भी उसका परिचय एवं अनुभूति पात्रता के अनुसार क्रमश: देना अत्यावश्यक होता है, जिसे प्रगमनशील विकास (Progressive Unfoldment) कहा जाता है । मूलतत्व, मूल कल्पना की नींव सुदृढ़ रखते हुए क्रमश: अधिकाधिक स्पष्ट होने वाला उस का आविष्कार, यही स्वाभाविक एवं शास्त्रीय प्रक्रिया है ।

जैसे पौ फटने के पूर्व खिड़की से सामने का पेड़ धुन्धला सा नजर आता है । पेड़ दिखता है, किन्तु अस्पष्ट सा । घंटे भर के बाद वही पेड़ अधिक स्पष्ट दिखने लगता है, और कुछ समय बाद वह अपनी सभी विशिष्टताओं के साथ पूरी तरह स्पष्ट दिखने लगता है । जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से कार्य करना है, उन्हें इसी प्रक्रिया से अपनी बातें दूसरों को समझाना पड़ेगी। जिन्हें निर्माण का कार्य करना है, उन्हें सम्पूर्ण सत्य जानते हुए भी, विवेक के साथ स्थान, समय, मात्रा आदि का विचार करते हुए अपनी बातें दूसरों को बताना होगी। संघ जैसे संगठन कार्य में "हिन्दु" "हिन्दुराष्ट्र" आदि सिद्धांतों का अविष्कार इसी प्रकार प्रगमनशीलता से विकसित होता आया है, जो कार्य की दृष्टि से अत्यन्त उचित ही है । सम्पूर्ण धारणा प्रारम्भ से ही स्पष्ट होते हुए भी, कार्यकर्ताओं के विकास एवं क्षमता के साथ-साथ वह अधिकाधिक विस्तार से एवं गहराई से क्रमश: समझायी गयी । पूजनीय डॉक्टर जी, श्री गुरुजी, तथा अपने अन्य विचारक इसी प्रकार इस विषय की व्यापकता क्रमश: अधिकाधिक स्पष्टता से समझाते गये हैं । जितनी अपनी क्षमता एवं शक्ति बढ़ेगी, उतनी ही ये बातें अधिकाधिक व्यापकता से हम समाज के सम्मुख रख सकेंगें ।

आज संकुचित दायरे में विचार करने वाला 'व्यक्ति' 'राष्ट्र' कल्पना तक अपनी व्यापकता बढ़ाने के लिये जागृत हो, यही अपना कार्य हैं, जो हमारी "हिन्दुराष्ट्र" की विशुद्ध शास्त्रीय भूमिका को मूर्त स्वरूप देने के मार्ग पर एक आवश्यक पाथेय है । जब हम शक्तिशाली थे, "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की धारणा लेकर संसार भर में पहुंच चुके थे

। आज अपनी क्षमता एवं संगठन विकसित होने पर, उसी 'विश्वगुरु' के स्थान पर भारत माता को पुनर्स्थापित करना अवश्य सम्भव होगा ।